3:1-9

“बुरे कामों से परे रहना”

2 तीमुथियुस 3 में बुरा समय ध्यान के केन्द्र हैं। “अन्तिम के दिनों में,” पौलुस ने कहा, “. . . कठिन समय आएँगे” (3:1)। उन कठिन समयों के लिये तैयार रहने के लिये, तीमुथियुस को कुछ बातों को *जानने* की आवश्यकता थी। इसी का वर्णन 3:1-9 में किया गया है। उसे कुछ बातों को *करने* की भी आवश्यकता थी। जिसका वर्णन 3:10-17 में किया गया है।

घृणित पाप (3:1-4)

[1]पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे। [2]क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, [3]दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, [4]विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे।

3:1-4 में बुरे कामों की सूची पढ़ने में सुखद नहीं लगती हैं; परन्तु तीमुथियुस को इन निर्देशों की आवश्यकता थी, और आज भी इनकी आवश्यकता है। जब हम अपने संसार में दुष्टता को देखते हैं, तो निराशा महसूस करना आसान होता है। पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस अपने दिन की भक्तिहीनता के लिये तैयार हो, और पवित्र आत्मा ने इन शिक्षाओं को संरक्षित किया ताकि हम भी तैयार हो सकें। यहाँ एक पुरानी कहावत लागू होती है: “पहले से सचेत होकर हथियार बाँध लेना।”

आयत 1. अध्याय 2 परमेश्वर के दास के लिये नम्र और कोमल होने की आवश्यकता के साथ समाप्त हो जाता है। हम अध्याय 3 से आश्वासन के साथ शुरू करने की उम्मीद कर सकते हैं कि यदि परमेश्वर का दास नम्र और कोमल है, तो लोग उसका अनुकरण करेंगे। इसके साथ, अध्याय शुरू होता है, **पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे**। दूसरे शब्दों में, “तीमुथियुस, भले ही आप अच्छे हों, इसका अर्थ यह नहीं है कि संसार अच्छा होगा। कठिन समय के लिये तैयार हो जाओ!” यूनानी पाठ में यह एक लम्बे वाक्य को शुरू करता है, जो आयत 5 तक जारी रहता है।

“कठिन” χαλεπός *(चालेपोस)* से आता है, प्राचीन यूनानी में जंगली जानवरों या उग्र समुद्रों का वर्णन करने के लिये उपयोग किया जाने वाला एक मजबूत शब्द है। यह एक अभिव्यक्ति है जिसका प्रयोग मत्ती 8:28 में गदरेनियों के दुष्टात्माओं का वर्णन करने के लिये किया गया था, जिससे “निपटना कठिन, हिंसक, और खतरनाक” था।[1] आनेवाला समय “विपत्तियों से भरा,” “कष्टदायक,” “जोखिमों से भरा,” “खतरनाक” और “भयानक” होगा। इन दिनों का सामना करना कठिन होगा, इनसे होकर गुजरना कठिन होगा, इन दिनों में बने रहना कठिन होगा।[2]

जब हम वाक्यांश “कठिन समय” सुनते हैं, तो शायद हमारे मन में दिनों के विचार आने लग जाते हैं जब हमारे पास पैसा नहीं था या हमारा स्वास्थ्य खराब था; परन्तु पौलुस को आर्थिक या शारीरिक कठिनाइयों का ध्यान नहीं था। उसका ध्यान नैतिक और आत्मिक समस्याओं पर था।

“अन्तिम दिनों में” कठिन समय आने वाला था। कुछ आश्वस्त हैं कि “अन्तिम दिन” मसीह के आगमन से पहले की समय की अवधि होगी। जबकि, पौलुस पूरे मसीही युग, “मानव इतिहास की अन्तिम अवधि” के बारे में बात कर रहा था।[3] पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने योएल 2 से उद्‌धृत किया: “और परमेश्‍वर कहता है, ‘कि *अन्त के दिनों में* ऐसा होगा’ ‘कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा’” (प्रेरितों 2:17; बल दिया गया है)। उसने वर्णन किया कि “*यह वह बात है* [प्रेरितों पर आत्मा का विस्तार], जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी” (प्रेरितों 2:16; बल दिया गया है)। इब्रानियों 1:2 कहता है, “*इन अन्तिम दिनों में* [परमेश्वर] ने हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं” (बल दिया गया है)। यह कि पौलुस ने अपनी टिप्पणियों में समय को दूर भविष्य तक सीमित नहीं किया है, जो पाठ में ही स्पष्ट है। 2 तीमुथियुस 3:2-5 में कठिन समय में रहे मनुष्यों का वर्णन करने के बाद, पौलुस ने वर्तमान काल का प्रयोग किया जब उसने तीमुथियुस से कहा, “ऐसों से परे रहना। इन्हीं में से वे लोग हैं जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं” (3:5, 6)। पौलुस द्वारा वर्णित कठिन समय उनके दिनों में बहुत वास्तविक थे। वे तीमुथियुस के जीवनकाल के समय भी पाए जाते थे। वे हमारे दिनों में देखे जाते हैं और मसीह के आगमन तक विद्यमान रहेंगे।[4]

आयत 2. पौलुस के लंबे वाक्य (3:1-5) में शब्द **क्योंकि** (γάρ, *गार)* - कारण को दिखा रहा है। वह विस्तार से बताने को तैयार था कि कठिन समय इतना कठिन *क्यों* होगा।

लेखक 2 तीमुथियुस 3:2-5 में और रोमियों 1 में दिए गए बुरे कामों की सूची के बीच समानताएँ बताते हैं, परन्तु इनमें अन्तर भी हैं। रोमियों 1 मसीह के आने से पहले अन्यजाति पापी संसार का वर्णन करता है। 2 तीमुथियुस 3, पौलुस के संसार का एक सूक्ष्म चित्रण देता है, परन्तु (जैसा कि हम देखेंगे) उसकी प्राथमिक चिन्ता *कलीसिया में* सांसारिकता और अभक्ति से थी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि 2 तीमुथियुस 3:1-5 “पाप का ब्यौरा” है।[5] वेयने जैक्सन ने इसे पौलुस के “पाप का घर” कहा और फिर कहा, “यह प्रेरित का सबसे

निराशाजनक आचरण की सूची में से एक है जिसके लिये मनुष्य सक्षम है।"[6] कठिन समय में लोगों की कम से कम अठारह नकारात्मक विशेषताओं को सूचीबद्ध किया गया है।

सूची को व्यवस्थित ढंग से बनाने का प्रयास किया गया है, परन्तु कुछ विशेषताओं को देखने में यह सहायक हो सकता है। उदाहरण के लिये, ध्यान दें कि सूची की शुरुवात कैसे होती है: "मनुष्य[7] स्वार्थी होंगे।" सूची के माध्यम से चलने वाली सामान्य धारणा स्वार्थ की भावना या स्वयं पर केन्द्रित होनी है।

इसके अतिरिक्त, हमें "प्रेम" शब्द के उपयोग पर ध्यान देना चाहिए। सूची की शुरुवात "स्वयं से प्रेम करनेवाले" और "पैसों से प्रेम करनेवाले" के साथ होती है और अन्त "परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले" के साथ होती है (3:4)। कई घृणित काम सूचीबद्ध हैं, परन्तु सभी समस्याओं का केन्द्र मन की समस्या है।

फिर यह ध्यान दिया जा सकता है कि लगभग आधी विशेषताएँ जिसकी शुरुवात उस बात से होती है जिसे यूनानी व्याकरण में "अल्फा प्राइवेटिव" कहते हैं। अर्थात्, शब्द सकारात्मक मूल से हैं, परन्तु अल्फा (α, *अ)* को उनके सामने लगाने से मना कर दिया जाता है (जिस तरह से हिन्दी में उपसर्ग "अ" का उपयोग करता है)।[8] चित्रित व्यक्तियों को सारांशित करने का एक तरीका यह है कि वह अच्छा, पवित्र और शुद्ध है, और फिर निष्कर्ष निकाला जाए तो, "वे ऐसा नहीं थे।"

इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, हमें प्रत्येक बातों को अलग-अलग जाँचना होगा। मेरा ध्यान मेरी जवानी के समय के एक कीचड़ से सने, बदबूदार और गंदे गौशाला में कड़ी मेहनत करने के दृश्य की ओर वापस चला जाता है। सूची का निरीक्षण करना एक मजेदार अनुभव नहीं होगा, परन्तु यदि हम समझते हैं कि परमेश्वर किन बातों को गलत मानता है और उसे क्यों गलत माना जाता है तो हम पूरी तरह सुरक्षित हैं।

अपनी परीक्षा शुरू करने से पहले एक अन्तिम बात आवश्यक है: जैसा कि हम प्रत्येक प्रविष्टि को देखते हैं, जिस भली बात को हम थामे रहते हैं उसमें सीमित होने के लिये हमारी आस-पास की दुनिया हमें लुभाने लगेगी; परन्तु इसके मूल्य को बनाए रखने के लिये, हमें अपने जीवन को जाँचने के लिये इसका उपयोग करने की आवश्यकता है। हम में से अधिकांश संसार और उसके मूल्यों को स्वीकार करने से अधिक उनसे प्रभावित होते हैं।

स्वार्थी। सभी वाक्यांश जो "चाहनेवाले" के बारे में बताते हैं वे मिश्रित शब्दों का उपयोग करते हैं जिनमें "प्रेम" के लिये इस बाइबल अभिव्यक्ति का एक रूप शामिल है: φιλία *(फिलिआ)।*[9] यूनानी साहित्य में वर्णित "प्रेम" का यह सबसे आम प्रकार था और किसी वस्तु या किसी मनुष्य से प्रीति रखना है।[10] **स्वार्थी** φίλαυτος *(फिलाउटोस)* से आता है, जो φιλία (*फिलिआ,* "प्रेम") और αὐτός (*ऑउटोस,* "स्वयं") का संयोजन है। एक ऐसी भावना है जिसमें हमें स्वयं से "प्रेम" करना है (मत्ती 22:39[11]) - अर्थात्, हमें अपनी चिन्ता करनी चाहिए (इफि.

5:28, 29)। परन्तु, यह हमारे जीवन की प्राथमिक चिन्ता कभी नहीं होना चाहिए। यीशु ने कहा कि उसके पीछे चलने के लिये, वह “अपने आप का इनकार करे” (मत्ती 16:24)।

लोभी। **लोभी** के लिये यूनानी शब्द, φιλάργυρος *(फिलारगुरोस),* जिसमें ἄργυρος (*अरगुरोस,* “चाँदी” या “पैसा”) φιλία (*फिलिआ,* “प्रेम”) से जुड़ा होता है।[12] जो स्वयं से प्रेम करता है वह स्वाभाविक रूप से उन सब बातों से प्रेम करेगा जो उसके मन की इच्छाओं को सुरक्षित कर सकता है। इससे पहले, हमने धन-के चाहनेवाले के खतरों पर एक अनुच्छेद को देखा था: 1 तीमुथियुस 6:9, 10. उस पाठ में, पौलुस ने पाया कि “रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है।”

इफिसुस के झूठे शिक्षक पौलुस की सोच से कभी दूर नहीं थे। आत्मिक क्षति जो वे पहुँचा रहे थे उसे महत्व देने से ही वे *स्वार्थी* थे। उनकी एकमात्र चिन्ता उनके स्वयं के सुधार के लिये थी। वे *लोभी* भी थे, समझते थे कि “भक्ति कमाई का द्वार है।” (1 तीमु. 6:5)।

“डींगमार” होना। **डींगमार** ἀλαζών *(आलाज़ोन)* से आता है, जो ἄλη (*आले,* “व्यर्थ घूमना”) से ली गई है।[13] मूल रूप से, *आलाज़ोन* एक मायावी था “जो दवाओं और मंत्रों और झाड़-फूँक की विधियों को लेकर उन्हें सभी बीमारियों का इलाज बताकर दावा करते हुए देश भर में घुमा करता था।”[14] अन्ततः, जिसे “डींगमार, ढोंगी” परिभाषा के आधार पर शब्द दिया गया।[15] एक लेक्सिकॉन ने *आलाज़ोन* को “व्यर्थ दिखावा करनेवाला, डींगमार” कहा।[16] झूठे शिक्षकों के बारे में, यह संदर्भ बताता है कि उन्होंने स्वयं और उनकी शिक्षाओं के बारे में सख्त दावों को तैयार किया।

“अभिमानी” होना। डींगमार का आन्तरिक स्रोत अगली विशेषता है: **अभिमानी** होना। “अभिमानी” ὑπερήφανος *(हूपेरेफानोस)* से आता है, यह ὑπέρ (*हूपेर,* “ऊपर”) और φαίνομαι (*फाइनोमाई,* “दिखाई देना”) द्वारा गठित एक मिश्रित शब्द है। यह शब्द “दूसरों के ऊपर स्वयं को दिखाने” को दर्शाता है।[17] एक अभिमानी मनुष्य सोचता है कि “उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे” (रोमियों 12:3)। निचली स्थिति से वह मानता है कि वह ऊपर अधिकार प्राप्त रहा है, वह दूसरों को नीचा दिखाता है। दियुत्रिफेस की तरह, “जो उनमें बड़ा बनना चाहता है” (3 यूहन्ना 9)।

निन्दक। अभिमानी डींगमार अक्सर अपने आपको अच्छा दिखाने के प्रयास में दूसरों को खराब दिखाने का प्रयास करते हैं। इसलिये, अगली विशेषता **निन्दक है**, सामान्य रूप से शब्द अनुवाद का “निन्दा करनेवाले” (βλάσφημος, *ब्लासफेमोस)* से किया गया है।[18] इस अनुच्छेद में, इसका तात्पर्य दूसरों के बारे में अपमानजनक बातों को बोलना है।

“माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले।” अगली चार विशेषताओं में पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित पापों का समूह होना प्रतीत होता है। कुछ लोग आश्चर्यचकित हो सकते हैं कि घर की समस्याएँ एक पाप-सूची में शामिल की

सकती हैं, परन्तु यह पौलुस की प्राथमिक चिन्ता थी - और यह हमारी भी होनी चाहिए। यह कहा गया है, “घर समाज की आधारशिला है; यदि यह टूट जाता है, तो राष्ट्र का पतन हो जाता है।”

यह समूह माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले के साथ शुरू होता है। “अनाज्ञाकारी” ἀπειθής *(अपेईथेस)* से आता है, जो अल्फा प्राईवेटिव (अस्वीकृत) शब्दों में से पहला है: πείθω (*पेईथो,* “सहमत कराना”), उपसर्ग α *(अ)* के साथ। यह एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो “सहमत होने के लिये तैयार नहीं है, विश्वास को कमजोर करता है, अनाज्ञाकारी है।”[19]

मूसा के द्वारा इस्राएल को दी गई पाँचवीं आज्ञा थी “अपने पिता और अपनी माता का आदर करना” (निर्गमन 20:12)। “माता-पिता का आदर करने का अर्थ है उनके बारे में अच्छी बातें कहना और उनसे विनम्रतापूर्वक बातें करना। इसका . . . अर्थ है कि इस तरह से अभिनय करना जो उनके प्रति उदारता और सम्मान दिखाता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर को पहला स्थान देने की उनकी शिक्षा और उदाहरण का पालन करना।”[20]

इसमें उनके हित के सम्बन्ध में चिन्ता शामिल होता है (मत्ती 15:1-9; 1 तीमु. 5:8)। इस आज्ञा का पालन करने में असफल लोगों की तुलना में किसी को भी परमेश्वर द्वारा कठोर दण्ड नहीं मिला। मूसा की व्यवस्था के अधीन हठीला और दंगैत बेटा पथराव करके मार डाला जाता था (व्यव. 21:18-20)। नए नियम (इफि. 6:1-3) में अपने माता-पिता का आदर करने की आज्ञा को दोहराया गया है। यीशु और उसके प्रेरितों द्वारा किए गए कुछ सबसे कठोर दण्ड उन लोगों पर निर्देशित किए गए थे जो इस सम्बन्ध में विफल रहे (मत्ती 15:1-9; 1 तीमु. 5:8)।

आज के संसार की एक व्यापक समस्या अभिभावकों के प्रति अनाज्ञाकारिता है। माईक हिक्सन ने पूछा “यदि बच्चे घर में आज्ञाकारिता के महत्व को नहीं सीखेंगे, तो हम यह सोच भी कैसे सकते हैं कि वे विद्यालय में, अपने कार्यस्थल में (कुलु. 3:22-23), वैधानिक अधिकारियों के प्रति (रोमियों 13:1-7), या कलीसिया में प्राचीनों के प्रति (इब्रा. 13:17) आज्ञाकारी होंगे?”[21]

“कृतघ्न” होना। **कृतघ्न** एक अन्य अल्फा अभावात्मक: ἀχάριστος *(एकैरिस्तोस)* से है। यहाँ पर χάρις (*कैरिस,* “धन्यवाद”) को α *(ए)* के द्वारा नकारात्मक किया गया है। इस शब्द के संबंध में, इसकी सामान्य प्रयुक्ति की जा सकती है। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से कहा, “हर बात में धन्यवाद करो” (1 थिस्स. 5:18)। परन्तु संभवतः, इस संदर्भ में, पौलुस के मन में अभिभावकों के प्रति कृतघ्न होने का पाप था। विलियम शेक्सपियर ने लिखा, “कृतघ्न सन्तान सांप के डंक से भी कितनी अधिक चुभने वाली होती है!”[22] विलियम बारकले ने कहा “जब युवक आयु वालों के प्रति सभी आदर को, तथा जिन्होंने उन्हें जीवन दिया है उनके प्रति कभी न चुकाए जाएँ वाले ऋण एवं मौलिक दायित्व खो देते हैं तो यह उस सभ्यता के पतित होने का उच्चतम चिन्ह है।”[23]

“अपवित्र” होना। उसी प्रकार से **अपवित्र** (ἀνόσιος, *एनोसियोस),* “पवित्र”

(ὅσιος, *होसियोस)* होने के शब्द का अनुवाद करता है जिसके साथ α *(ए)*[24] जोड़ने के द्वारा उसे नकारात्मक किया गया है। यहाँ भी सामान्य प्रयुक्ति की जा सकती है। आज बहुतेरों ने परमेश्वर, मसीह एवं बाइबल के प्रति आदर को खो दिया है। किन्तु शास्त्रीय यूनानी भाषा में *होसियोस* "को कभी-कभी पारिवारिक आदर [पुत्र या पुत्री के द्वारा अभिभावक के लिए आदर] के लिए प्रयोग किया जाता था। संदर्भ संकेत करता है कि यहाँ पर इसी भाव में इसे प्रयोग किया गया है।"[25] जब बच्चे अपने अभिभावकों का आदर नहीं करते हैं, तो ऐसा नियमित देखा गया है कि वे अपवित्र जीवन भी व्यतीत करते हैं।

आयत 3. *"दयारहित" होना।* अगला गुण निश्चय ही परिवार के विषय में है: **दयारहित** (ἄστοργος, *एसटोरगोस)।* "प्रेम" के लिए यूनानी शब्द को α *(ए)* जोड़ने के द्वारा उसे नकारात्मक किया गया है। परन्तु यह φιλία *(फिलिया)* या ἀγάπη *(अगापे)* प्रेम नहीं है। परन्तु यह στοργή *(स्टोरगे)* है, जो नए नियम में केवल संयुक्त शब्दों में ही पाया जाता है। यह यहाँ और रोमियों 1:31, जहाँ इसका अनुवाद "मयारहित" हुआ है, में नकारात्मक रूप में आया है, और रोमियों 12:10 में सकारात्मक रूप में हुआ है, जहाँ आया है "भाईचारे के प्रेम।" *स्टोरगे* किसी निकट संबंध पर आधारित प्रेम या निष्ठा को संबोधित करता है। वेंडल ब्रूम ने इसे "आंट मिनी का प्रेम" कहा। यह आपके द्वारा किए गए किसी समर्पण पर आधारित प्रेम *(अगापे)* नहीं है या इसलिए कि जिसके प्रति आप प्रेम व्यक्त कर रहे हैं वह चाहने के योग्य है *(फिलिया)* नहीं है। परन्तु जैसा आंट मिनी के साथ है, यह प्रेम केवल इसलिए है क्योंकि उनसे पारिवारिक संबंध है।[26]

स्टोरगे एक स्वाभाविक प्रेम है। अभिभावकों का अपने बच्चों से और बच्चों का अपने अभिभावकों से प्रेम करना स्वाभाविक है। ऐसा न होना अस्वाभाविक है। KJV में *एसटोरगोस* का अनुवाद "स्वाभाविक प्रेम रहित" हुआ है। यहाँ NRSV और भी अधिक प्रबल है; वह इसे "अमानवीय" कहती है।

"क्षमारहित" होना। हम अब नृशंस गुणों की अधिक सामान्य सूची को लौटते हैं। एक को छोड़ कर इनमें से सभी अल्फा अभावात्मक हैं। इस समूह में सर्वप्रथम है **क्षमारहित** (ἄσπονδος, *एस्पोंडोस),* जिसका रोचक इतिहास है। यह σπονδή (*स्पोंडे*, "चढ़ावा") के साथ α *(ए)* जोड़ने के द्वारा उसे नकारात्मक किया गया है, जिसका शब्दार्थ है "बिना किसी चढ़ावे के।" यह उस स्थिति को दिखाता था "जहाँ कोई युद्ध विराम न हो," क्योंकि "चढ़ावे चढ़ाना संधियों और समझौतों के किए जाने के साथ होते थे।"[27] अन्ततः यह ऐसे के लिए प्रयोग किया जाने लगा जो "किसी दूसरे व्यक्ति के साथ होने वाली समस्या के विषय कोई समाधान निकालने का प्रयास करने को तैयार न हो।"[28] ऐसा व्यक्ति इतनी अधिक कड़वाहट और क्रोध से भरा होता है कि वह अपने विरोधी के साथ बैठकर परस्पर समस्याओं का समाधान निकालने के लिए सहमत नहीं होता है।

कुछ अनुवादों में "क्षमा न करने वाला" (NKJV; NLT; NIV) आया है। ये व्यक्ति अपने मनों में क्षमा प्रदान करने की क्षमता नहीं रखते हैं। "मैं तुम्हें कभी क्षमा नहीं करूँगा!" से बढ़कर हताश करने वाला और कोई कथन नहीं है। जो

ऐसा व्यवहार रखते हैं वे या तो भुला देते हैं या फिर प्रभु यीशु द्वारा कहे गए तथ्य, यदि हम औरों को क्षमा नहीं करेंगे तो परमेश्वर भी हमें क्षमा नहीं करेगा (मत्ती 6:15), की अवहेलना करते हैं। ऐसों के लिए NEB और REB कहते हैं कि “अपने द्वेष में वे कठोरचित्त हैं।”

एस्पोंडोस का कभी-कभी एक दूसरे अर्थ में, संधि-विच्छेद करने वाले के लिए भी प्रयोग किया जाता था - कोई ऐसा व्यक्ति जो समझौता करे और फिर जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की, उसे पूरा न करे। KJV में “संधि-विच्छेद करने वाले” आया है। हम *एस्पोंडोस* का अर्थ चाहे संधि न करने वाला समझें या संधि तोड़ने वाला, पौलुस यही कहता, “ऐसे मत बनो।”

दोष लगाना। इससे अगले व्यवहार को हम 1 तीमुथियुस में देख चुके हैं: **दोष लगाने वाले** (διάβολος, *डायाबोलोस* से)।[29] दोष लगाना, इससे पिछले पद के निंदक के समान है। *डायाबोलोस* (सामान्यतः जिसका अनुवाद “शैतान” होता है) शैतान की एक उपाधि है। जब शब्दों से हत्या करने वाले घातक असत्यों को फैलाते हैं, वे शैतान का कार्य करते हैं।

“असंयमी” जीवन जीना। इससे अगला है **असंयमी** जो कि ἀκρατής *(अक्राटेस)* से है, जो κράτος (*क्रटोस*, “बल”) के साथ α *(ए)* जोड़ने के द्वारा उसे नकारात्मक करने से है।[30] “जब इस प्रकार के पापों की सूची में इसका प्रयोग किया जाता है, तब *[अक्राटेस]* तुलना में कम हानिकारक बातें जैसे कि भोजन के लिए नहीं, परन्तु नैतिक विफलता की बातों के लिए प्रयोग होता है।”[31] ये व्यक्ति पूर्णतः और निर्लज्जता के साथ अनैतिक होते हैं, और अपनी वासनाओं को नियंत्रित करने के कोई प्रयास नहीं करते हैं। टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले होटल या जुआ खानों के विज्ञापन: “अपने संकोच को पीछे छोड़कर चले आइए” संसार की बुलाहट का एक सटीक उदाहरण है। दूसरे शब्दों में, वह विज्ञापन अपने ग्राहकों को प्रोत्साहित करता है कि वे उसे त्याग दें जो व्यक्तियों को पशुओं से भिन्न करता है।

“कठोर” होना। पशुओं की बात करते हुए, अगला गुण है **कठोरता**। यह ἀνήμερος *(एनेमेरोस)* से है, जो विवरण जंगली जानवरों के लिए अधिक उपयुक्त है न कि मनुष्यों के लिए। यह ἥμερος (*हेमेरोस*, “नम्र” या “पालतू”) के साथ α *(ए)* जोड़ने के द्वारा उसे नकारात्मक करने से है। इसका अर्थ है “पालतू नहीं है, वहशी”[32] और उन लोगों को दिखाता है जो पशुओं के समान रहते हैं। बारकले ने कहा, *एनेमेरोस* “ऐसी वहशत को दिखाता है जिसमें न तो कोई संवेदनशीलता है और न कोई सहानुभूति।”[33] किसी विशेषतः निर्मम अपराध के बारे में सुनने के पश्चात हम कहते हैं “कोई ऐसा कैसे कर सकता है?” इसका उत्तर *एनेमेरोस* में मिलता है: करने वाला “कठोर” है।

भले के बैरी। अल्फा अभावात्मक का अंतिम है ἀφιλάγαθος *(एफिलागैथोस)*, जिसका अनुवाद **भले के बैरी** हुआ है। इस शब्द में क्रिया φιλέω (*फिलियो*, “प्रेम”) की ἀγαθός (*अगैथोस*, “भला”) के साथ संधि की गई है, और फिर इसे α (*ए*) जोड़ने के द्वारा नकारात्मक बनाया गया है। इसका

शब्दार्थ है "भले से प्रेम नहीं रखना।"[34] तीतुस 1:8 में, प्राचीनों के लिए दिए गए गुणों में से एक है "भलाई का चाहने वाला" (ESV)। उस खण्ड में φιλάγαθος *(फिलागैथोस)* में जो भी और सब कुछ जो भला है उससे प्रेम करना सम्मिलित है।[35] यहाँ, इसका नकारात्मक रूप है जिसका अभिप्राय कुछ भी और सब कुछ जो भला है से है। जैसे कि ज्योति अन्धकार को प्रगट कर देती है, उसी प्रकार भलाई उनके पापी होने को प्रगट कर देती है, जो भले के बैरी हैं। वे हर उस बात का विरोध करते हैं जो उन्हें अपना आकलन परमेश्वर के मापदण्ड के अनुसार करने को बाध्य करती है। अन्य बातों के अतिरिक्त वे मसीहियों से, बाइबल से, चर्च से बैर रखते हैं।

आयत 4. यहाँ कठिन दिनों के तिरस्करणीय पापों का अंतिम समूह है। पौलुस ने कहा मनुष्य "विश्‍वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्‍वर के नहीं वरन सुख विलास ही के चाहनेवाले होंगे।"

"विश्‍वासघाती" होना। इस अंतिम समूह का प्रथम शब्द है **विश्‍वासघाती**, जो παραδίδωμι *(पैराडिडोमी)* से है, जिसका अर्थ होता है "किसी को दे देना" अर्थात किसी को अधिकारियों को सौंप देने के द्वारा विश्वासघात करना। *प्रोडोटेस* का अनुवाद "विश्वासघाती" हो सकता है[37] और इसका प्रयोग यहूदा इस्करियोती के लिए किया गया (लूका 6:16)। पौलुस के दिनों में इसका प्रयोग विशेषतः उनके लिए होता था जो विश्वासघात द्वारा मसीहियों को रोमी अधिकारियों को दे देते थे। यह आज, ऐसा कोई भी हो सकता है जिस पर विश्वास न किया जा सके - ऐसे व्यक्ति जो आगे बढ़ने के लिए कुछ भी करने को तैयार हों।

"ढीठ" होना। ढीठ προπετής *(प्रोपेटेस)* से है, जो πρό (*प्रो,* "आगे") और πίπτω (*पिपटो*, "गिरना") से बना है, जिसका शब्दार्थ है, "आगे गिरना"[38] या "सिर के बल गिरना।"[39] प्रतीकात्मक रीति से यह उनका ध्यान करवाता है जो बिना उसके परिणामों का विचार किए (और उनकी चिंता किए), विशेषकर दूसरों पर उन परिणामों के प्रभाव के विषय, कार्य करने की शीघ्रता करते हैं। वॉल्टर बाऊर की शब्दावली में *प्रोपेटेस* की परिभाषा "उतावला, जल्दबाज़, असावधान, विचारहीन" है।[40] ये व्यक्ति न केवल बिना विचारे बोलने और कार्य करने वाले होते हैं, वरन हठीले भी होते हैं। कोई उन्हें कुछ नहीं बता सकता है।

"घमण्डी" होना। सूची के अन्त की ओर आते हुए, जो **घमण्डी** (τυφόω, *ट्यूफू*[41]) हैं हम उनमें के प्रमुख पाप, अपने पर ध्यान लगाए रखना, अभिमानी, फूले हुए होना, पर आते हैं। NEB में "अपने महत्व को लेकर फूले हुए होना" है। उन लोगों की, अपने ज्ञान, अपने स्वरूप, और अपने महत्व को लेकर अपनी राय सामान्यतः बढ़ा-चढ़ा कर थी। याकूब ने लिखा, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है" (याकूब 4:6)।

"परमेश्‍वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहनेवाले" होना। यहाँ हम सूची के चरमोत्कर्ष पर आते हैं: **परमेश्‍वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे**। ये दोनों ही वाक्याँश संयुक्त शब्दों से अनुवाद किए गए हैं। "सुखविलास ही के चाहनेवाले" φιλήδονος *(फ़िलेडोनोस)* से है, जो φίλος (*फिलोस*, "प्रेमी")

और ἡδονή (*हेडोने*, “विलास”)[42] के मिलने से बना है। “परमेश्वर के प्रेमी” φιλόθεος *(फिलोथियौस)* से है, जो φίλος (*फिलोस*, “प्रेमी”) के साथ θεός (*थियौस*, “परमेश्वर”) के मेल से है।

विलास या आनन्द लेने में कोई बुराई नहीं है। “. . . परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है” (1 तीमु. 6:17)। परन्तु जब आनन्द मनाना हमारी प्राथमिकताओं, हमारे समय, हमारे धन, या हमारी शक्ति में परमेश्वर का स्थान ले लेता है, तो वह बहुत गलत हो जाता है। विलासिता के चाहने वाले के लिए हमारे पास उनकी जीवन-शैली के लिए जो सुख-विलासों के चाहने वाले हैं, एक शब्द है जो “सुख-विलास” के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द से आता है: “विलासिता।” हम ऐसे समाज में रहते हैं जो विलासिता के लिए उन्माद में है, और इस उन्माद में पकड़े जाने से बचकर रहना कठिन है। बाइबल हमें हमारी प्राथमिकताएं स्मरण करवाती है: “तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।” बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख” (मत्ती 22:37-39)।

तिरस्करणीय पापी (3:5-9)

ढोंगी लोग (3:5)

[5]वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।

आयत 5. आयत 2 से 4 तक पापमय व्यवहार की सूची से होकर निकलने के पश्चात यह आयत अप्रत्याशित प्रतीत हो सकती है। संभवतः हम आशा नहीं रखेंगे कि ऐसे घृणित पाप करने वालों की उपस्थिति कलीसिया में होगी। परन्तु पौलुस ने लिखा **वे भक्ति का भेष तो धरेंगे**। भेष धरना μόρφωσις *(मौरफोसिस)* एक “रूपरेखा” के समान है।[43] यहाँ विचार “मात्र बाहरी स्वरूप” का है।[44] “भक्ति” (εὐσέβεια, *यूसिबिया)* का अभिप्राय परमेश्वर के लिए एक गंभीर आदर होना चाहिए, परन्तु इस संदर्भ में यह “केवल दिखावे की भक्ति” का संकेत करता है।[45] उन दिनों में *यूसिबिया* “का भक्ति या धर्म के लिए प्रयोग किया जाना सामान्य था।” इसलिए इस खण्ड का अनुवाद “धर्म का बाहरी स्वरूप बनाए रखना” भी हो सकता है (CJB)। NEB में आया है “ऐसे मनुष्य जो धर्म का बाहरी आडम्बर बनाए रखते हैं।”

प्रत्यक्षतः ये कलीसिया के सदस्य थे - कम से कम दिखाने के लिए।[47] वे आराधना सभाओं में सम्मिलित होते थे। वे गाते थे। वे प्रार्थनाओं के लिए “आमीन” कहते थे। वे प्रभू भोज में सम्मिलित होते थे। संभवतः वे अपने धन से भी सहयोग देते थे। परन्तु आराधना में वे जो कुछ भी करते थे वह दिखावे का

था; वह उनके मन से नहीं आता था। फरीसियों के समान, वे “चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं” (मत्ती 23:27)। यदि उनके मन आराधना में नहीं थे तो फिर वे भाग ही क्यों लेते थे? क्योंकि यह उनके लाभ के लिए था। इससे उन्हें विश्वसनीयता मिलती थी। गलत शिक्षाओं के शिक्षकों को, घरों में प्रवेश मिलता था।

पौलुस के कथन का यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि “स्वरूप” का महत्व नहीं है। जे. ग्लेन गोउल्ड ने लिखा,

> इसका अभिप्राय यह कहना नहीं है कि सच्चा धर्म बिना स्वरूप के होता है। वास्तव में स्वरूप और सामर्थ्य न तो स्वाभाविक शत्रु हैं और न ही एक दूसरे के विरुद्ध। वास्तव में, यदि परमेश्वर की आराधना को अनुग्रह और मनोहरता की वह बात होना है जैसी परमेश्वर चाहता है तो स्वरूप और सामर्थ्य में विवाह होना चाहिए।[48]

जैसे कि अन्य सभी बातों के लिए, आराधना में भी हमें भरसक प्रयास करना चाहिए कि हम वह करें जो परमेश्वर चाहता है, और वैसे करें जैसे वह चाहता है। साथ ही हमें यह भी समझना चाहिए कि, जैसे कि डेटन कीसी ने कहा, “बिना विश्वास के स्वरूप धोखा है।”[49]

पौलुस ने अपना दोषारोपण जारी रखते हुए कहा **पर उसकी शक्ति को न मानेंगे**[50]। यहाँ “उसकी” का पूर्ववर्ती पिछले वाक्याँश का “भक्ति/धर्म” है। संभवतः “उसकी शक्ति को न मानेंगे” का तात्पर्य उस शिक्षा से है कि “पुनरुत्थान हो चुका है” (2:18; देखें रोमियों 1:4)। ऐसे नहीं तो वैसे, झूठे शिक्षकों की हेरा-फेरियां सुसमाचार, जो “उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है” (रोमियों 1:16; देखें इब्रा. 4:12) का खंडन करती थीं। वे अपने जीवनों के द्वारा भी “उसकी शक्ति को न मानेंगे” (2 तीमु. 3:6)। तीतुस 1:16 में गलत शिक्षाओं के शिक्षकों पर किया गया यह दोषारोपण दिया गया है: “वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं, पर अपने *कामों* से उसका इनकार करते हैं” (बल दिया गया है)। उन्होंने परमेश्वर की प्रेरणा के वचन को अपने जीवनों में प्रभावी नहीं होने दिया। वे दिखावा तो करते हैं कि उनमें बहुत सामर्थ्य है; परन्तु, वास्तविकता में वे सामर्थ्यहीन हैं।

आज-कल एक लोकप्रिय विचार प्रचलित है कि मसीही प्रेम असीम सहनशील होता है, किसी को भी और हर बात को ग्रहण कर लेता है। परन्तु पौलुस ने तिमुथियुस को आज्ञा दी, **ऐसों से परे रहना**। “परे रहना” (ἀποτρέπω, *एपोट्रेपो)* अर्थात “पलट जाना”; यह किसी के साथ संबद्ध होने से जान-बूझकर मना करना है।[51] यहाँ NKJV में आया है “ऐसे लोगों से पलट जाना।”

सामान्य रीति से बुरे व्यक्तियों से बचकर रहना मूल्यवान होता है (भजन 1:1), परन्तु संसार में बुरे लोगों के संपर्क में आने से बचने के लिए “तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता” (1 कुरि. 5:10)। पौलुस के मन में कलीसिया के अन्दर विद्यमान झूठे शिक्षक और उनके अनुयायी थे। इन लोगों के विषय में

भी, “परे रहने” की आज्ञा का तात्पर्य उनके साथ हर प्रकार के संपर्क से बचे रहना नहीं था, क्योंकि तीमुथियुस को उन्हें सही बात के लिए समझना था (2 तीमु. 2:25, 26)। तीमुथियुस को जिस बात से दूर रहना था, वह थी ऐसा कोई भी संपर्क जो उसके कार्य और सन्देश में बाधा बनता। उसे उनके जीवन-शैली और शिक्षाओं से बचकर रहना था। उसे विशेषतयः उनके साथ व्यर्थ चर्चाओं में पड़ने से बचकर रहना था।

यद्यपि पौलुस ने 3:1 में भविष्य काल की क्रिया का उपयोग किया (“आएँगे”), यह प्रकट है कि उसका विचार यही था कि “कठिन समय” आ गए थे: “उन्होंने उसकी शक्ति को नहीं माना है। ऐसों से परे रहना” (3:5)। कुछ का मानना है कि “परे रहना” से तात्पर्य है कि यदि दोषी व्यक्ति पश्चातापकरके परिवर्तित नहीं होता है तो उससे संगति हटा लेनी चाहिए।[52] यदि ऐसा है तो यह खण्ड तीतुस 3:10, 11 के समान बन जाता है।

धूर्त लोग (3:6-8)

[6]इन्हीं में से वे लोग हैं जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं, और उन दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं जो पापों से दबी और हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं, [7]और सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुँचतीं। [8]जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं; ये ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं।

आयतें 6, 7. पौलुस ने भ्रम फ़ैलाने वालों और उनकी कार्यविधि का भांडा फोड़ किया: **इन्हीं में से वे लोग हैं जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं, और उन दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं जो पापों से दबी और हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं, और सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुँचतीं।**

पौलुस ने कहा वे “घरों में घुस आते हैं।” “घुस आते” ἐνδύνω *(एनड्यूनो)* से है, जिसका शब्दार्थ है “अन्दर आ जाना” परन्तु इसमें “गौण तथा अकर्मक महत्व चतुराई से घुस आने का है”[53] (KJV देखें)। बाऊर की शब्दावली कहती है कि *एनड्यूनो* की परिभाषा है “किसी इलाके में छल या धोखे से घुस आना।”[54] संभवतः आज हम कहते “वे छुपकर चालाकी से अन्दर आ जाते हैं।”

उस समय में महिलाओं के लिए बहुत कम कार्य होते थे, इसलिए अधिकांश महिलाएँ दिन में घर पर ही होती थीं। सीधे-सादे स्वरूप, अच्छा व्यवहार, मोहक मुस्कान, सहानुभूतिपूर्ण रवैया, और चापलूसी की बातों के साथ झूठे शिक्षक घरों में अन्दर आ जाते थे। रॉनल्ड ए. वार्ड ने ऐसे व्यक्तियों को नाम दिया, “चिकनी-चुपड़ी जीभ वाले दुष्ट।”[55]

एक बार घर के अन्दर आ जाने के बाद, ये पुरुष “दुर्बल स्त्रियों को वश में कर

लेते” थे। “दुर्बल स्त्रियों” γυναικάριον *(गुनाइकेरीयोन)* के बहुवचन स्वरूप का एक अर्थ है। यह γυνή *(गुने),* जो “महिला” या “पत्नी” का अल्प है। यहाँ प्रयुक्त शब्द का शब्दार्थ है “छोटी महिलाएँ,” परन्तु यह अभिव्यक्ति *गुनाइकेरीयोन* में निहित तिरस्कार को व्यक्त नहीं कर पाती है। इस तिरस्कार को व्यक्त करने के लिए, कुछ अनुवादकों ने अन्य वाक्यांशों जैसे कि “दुर्बल-इच्छाशक्ति” (CJB), “भोली” (NKJV), “अस्थिर और दरिद्र” (MSG), और “मूर्ख” (KJV) का प्रयोग किया है। हम इनमें जोड़ सकते हैं, “आत्मिकता में अपरिपक्व।”

यह पौलुस के द्वारा उसके या आज हमारे समय में सभी स्त्रियों का बयान करने के लिए नहीं था। उस समय में भक्त स्त्रियाँ कलीसिया के कार्यों में प्रमुख भूमिकाएं निभाती थीं,[56] जैसे कि आज भी करती हैं। वरन पौलुस कुछ विशेष प्रकार की स्त्रियों का वर्णन कर रहा था जो गलत शिक्षाएँ देने वालों के निशाने पर होती थीं। यह आज भी सत्य है कि कुछ प्रकार के लोग (चाहे पुरुष अथवा स्त्रियाँ) भिन्न पंथों और उनके अगुवों की पुकार के प्रति अधिक भावुक होते हैं। ऐसे लोग, धूर्त व्यक्तियों द्वारा, तोड़े जाने के लिए तैयार फल होते हैं।

झूठे शिक्षकों का उद्देश्य था इन स्त्रियों को वश में कर लेना। “वश में करना” (αἰχμαλωτίζω, *अईकमालोटिज़ो)* युद्ध-बंदियों के संदर्भ में प्रयोग होता था। यह αἰχμή (*अईकमे,* “भाला”) और ἁλωτός (*हैलोटॉस,* “बंदी”) शब्दों से मिलकर बना है, इस क्रिया का मूल अर्थ था “बंदी बनाया गया” “भाले” के द्वारा। परन्तु इस लेख में, सैनिक अभिप्राय के स्थान पर अधिक सामान्य अर्थ “नियंत्रण में लेना” लागू होता है।[58]

“दुर्बल स्त्रियों” की झूठे शिक्षकों के संदेशों में फंसने की संभावना अधिक थी क्योंकि वे “पापों से दबी” हुई थीं। “दबी हुई” σωρεύω *(सोरेयुओ)* का अर्थ वस्तुओं के ढेर से दबा होना है।[59] इन स्त्रियों के विवेकों पर पापों का ढेर लगा हुआ था; वे दोषों के बोध से “अभिभुतित” थीं।[60] संभवतः वे मसीहियत में नई परिवर्तित स्त्रियाँ थीं जिन्होंने अभी तक सुसमाचार में उपलब्ध दया और क्षमा के सिद्धान्त के महत्व को समझा नहीं था।

हम यह नहीं जानते हैं कि उनके पाप क्या थे। उस समय के तथा आज के भी, अधिकांश महानगरों के समान, इफिसुस भी अत्यधिक दुराचारी था। यह सुझाव दिया गया है कि यह स्त्रियाँ पहले मंदिरों की वेश्याएं रही होंगी। प्रत्यक्षतः उन्होंने इतना तो सीख लिया था कि उन्होंने पाप किए हैं, परन्तु यह नहीं सीखा था कि प्रभु से मिलने वाली क्षमा से मुक्ति भी मिलती है (मत्ती 11:28)। ऐसे में उनके पास झूठे शिक्षक आ जाते थे।

अपने भूत-काल के विषय दोष-बोध होने के अतिरिक्त, उन स्त्रियों में वर्तमान की लालसाओं का आकर्षण भी था: “हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं।” “अभिलाषाएं” ἐπιθυμία *(एपीथूमिया)* से है, जो प्रबल लालसाओं का अभिप्राय देता है - इस खण्ड में दुराचार की प्रबल लालसाएं।[61] पौलुस ने ज़ोर दिया कि पवित्र-आत्मा ऐसी अभिलाषाओं को नियंत्रण में रखने में हमारी सहायता कर सकता है (रोमियों 8:13), परन्तु जिन “दुर्बल स्त्रियों” की बात यहाँ

हो रही है वे एक पराजय की ओर बढ़ते हुए युद्ध में थीं। हमने पहले ध्यान किया था कि झूठे शिक्षक संभवतः यूनानी दर्शन से प्रभावित थे। एक विचारधारा थी "सभी अभिलाषाओं को दबा दो!" (देखें 1 तीमु. 4:3), जबकि एक अन्य कहती थी "उन अभिलाषाओं को खुला छोड़ दो! उन्हें मुक्त व्यवहार करने दो!" ये शिक्षक उस दूसरी विचारधारा वाले हो सकते थे। यदि ऐसा था, तो वे कहते होंगे, "अपनी प्रबल लालसाओं के विषय चिन्तित मत हो। उन्हें दबाने के प्रयास मत करो। उनके अनुसार करो।"

इन स्त्रियों के विषय पौलुस का अंतिम विवरण था कि वे "सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुँचतीं" (3:7)। वे सीखना चाहती थीं, जो अच्छा है; परन्तु उनमें उसकी कुछ भी समझ-बूझ नहीं थी, जो बुरा था। उनके मन स्पंज के समान थे, जो जानकारी (चाहे सच्ची या झूठी) को इधर-उधर से, हर स्थान से सोखते रहते थे। NLT में लिखा है, "ऐसी स्त्रियाँ सदा ही नई-नई शिक्षाओं का अनुसरण करती रहती हैं।" संभवतः जो उन्हें पसंद आता था वे उसे ग्रहण कर लेती थीं और जो पसन्द नहीं होता था उसे त्याग देती थीं (देखें 4:3)। अन्त में वे अपने ही पक्षपातपूर्ण निर्णयों पर आ जाती थीं। परन्तु वे "सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुँचतीं" थीं।[62] यह दुखद है, क्योंकि केवल सत्य ही स्वतंत्र कर सकता है (यूहन्ना 8:32)। सत्य के प्रति प्रेम के बिना, लोग असत्य पर विश्वास कर लेंगे और नाश हो जाएँगे (2 थिस्स. 2:10-12)।

आयत 8. इस आयत में और इससे अगली में, पौलुस पीड़ा से पीड़ित बनाने वालों की ओर मुड़ा। **जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं।** यन्नेस और यम्ब्रेस मिस्र के जादूगरों में से दो हो सकते हैं जिन्होंने मूसा का सामना किया जब वह परमेश्वर के सन्देश "मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे" को देने के लिए फिरौन के महल में खड़ा हुआ (देखें निर्गमन 5:1)।

यद्यपि इब्रानी बाइबल में फिरौन के जादूगरों के नाम नहीं हैं, किन्तु इब्रानी परंपरा में उनमें से दो को "यन्नेस" और "यम्ब्रेस" नाम दिए गए हैं। पौलुस द्वारा इन नामों का लिया जाना पवित्र-आत्मा द्वारा इन पारंपरिक नामों का अनुमोदन हो सकता है।[63] यह संभव है कि ये नाम लिखे जाने से पहले, मौखिक परंपरा द्वारा सदियों से सही रूप में बचा कर रखे गए। सबसे प्राचीन लेख जिसमें "यन्नेस" नाम विद्यमान है वह मृत सागर के चम्रपत्रों से है, जो ईसा पूर्व दूसरी या पहली शताब्दी से है।[64] यह भी हो सकता है कि दोनों "यन्नेस" और "यम्ब्रेस" पौलुस द्वारा प्रयुक्त अरामी टारगुम में आए हों। बाद के समय के एक टारगुम में निर्गमन 7:11 में ये दोनों नाम विद्यमान हैं।[65]

एक अन्य विकल्प है कि यहूदी, जिन्हें बिना नाम वालों को नाम देना बहुत पसन्द था, उन्होंने इन नामों "यन्नेस" और "यम्ब्रेस" का आविष्कार किया हो। हम जानते हैं कि उन्होंने दोनों जादूगरों के लिए बहुत सी कहानियाँ गढ़ ली थीं, यद्यपि वे कहानियाँ परस्पर मेल नहीं खाती हैं।[66] यदि यह बात है तो पौलुस व्यंग्य का प्रयोग कर रहा था, और प्रभावी रूप से कह रहा था, "झूठे शिक्षक

यहूदी कहानियों को चाहते हैं। उन्हें दोषी ठहराने के लिए मैं भी एक यहूदी कहानी का प्रयोग करता हूँ।"[67]

पौलुस का 3:8 में इन दोनों व्यक्तियों का उल्लेख करने का जो भी अभिप्राय रहा हो, जो वह कहना चाह रहा था उसे समझना सरल है: जैसे उन्होंने मूसा का विरोध किया था, उसी प्रकार से झूठ के शिक्षक, पौलुस का और अन्यों का जो परमेश्वर के सत्य को सिखाते थे, विरोध करते हैं।

पौलुस ने कहा, वे, **ये ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है**। "भ्रष्ट" καταφθείρω *(काटाफथेइरो)* से है, जो कि क्रिया φθείρω (*फथेइरो*, "भ्रष्ट") और उसे तीव्र करने के लिए लगे गए κατά *(काटा)* से है।[68] केवल मन ही सच्चाई में और गलती में परस्पर भिन्नता कर सकता है। जब मन भ्रष्ट हो तो गलती की पहचान करने की समझ-बूझ होने की सारी आशा जाती रहती है!

ये पुरुष **विश्वास के विषय में निकम्मे** थे। "विश्वास" यीशु में विश्वास पर केंद्रित शिक्षाएं है। जिसका "तिरस्कार" (ἀδόκιμος, *अदोकिमोस)* किया गया, वह प्रयोग होने के योग्य नहीं पाया गया और उसे कूड़े के ढेर पर फेंक दिया गया।[69] झूठे शिक्षकों को प्रभु ने तौल के देखा था और निकम्मा पाया (देखें दानिय्येल 5:27)।

असफल लोग (3:9)

[9]पर वे इससे आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी।

आयत 9. इतना निराशाजनक चित्र बनाने के पश्चात, यह संभव है कि पौलुस को (पवित्र-आत्मा के मार्गदर्शन से) आभास हुआ कि तीमुथियुस को प्रोत्साहन की आवश्यकता है, इसलिए उसने कुछ आश्वासन भी दिया: **पर वे इससे आगे नहीं बढ़ सकते** [προκόπτω, *प्रोकोपटो*[70]], **क्योंकि जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी**। "अज्ञानता" ἄνοια *(एनोईया)* का अनुवाद है, जो νοῦς (*नोउस*, "मन" या "समझ") में α *(ए)* लगाने से बनता है। इसका अभिप्राय है वह "जिसमें समझ-बूझ न हो।"[71] GNT में यह भावात्मक अनुवाद है: "सभी देख लेंगे कि वे कितने मूर्ख हैं।"

इस बात को चित्रित करने के लिए पौलुस वापस मूसा के विरोधियों के उदाहरण की ओर मुड़ा: **जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी**। संभवतः यह उस घटना का संकेत करता है जब हारून ने मूसा की लाठी को फेंका और वह सांप बन गई। जब फिरौन के जादूगरों ने अपनी युक्ति से इस आश्चर्यकर्म को दोहराने का प्रयास किया, तब मूसा के सांप ने उनके साँपों को खा लिया (निर्गमन 7:10-12)। साथ ही, पहली दो विपत्तियों के पश्चात, जादूगरों ने भी "वैसा ही किया" (निर्गमन 7:22; 8:7); परन्तु

कुटकियों के आश्चर्यकर्म के बाद, “तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के बल से हम भी कुटकियां ले आएं, *परन्तु यह उन से न हो सका”* (निर्गमन 8:18; बल दिया गया है)। वे अपमानित होकर हट गए। उनकी मूर्खता सब पर प्रगट हो गई थी।

यद्यपि कठिन समय और झूठे शिक्षक सदा ही होंगे, अन्ततः प्रत्येक झूठा शिक्षक असफल हो जाएगा। पौलुस ने यह स्पष्ट नहीं किया कि कब और कैसे “उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो जाएगी।” यह तब हो सकता है जब समझ-बूझ रखने वाले शिष्य उनके छल से अलग देखने पाएँ। हो सकता है यह तब हो जब उनका देहांत हो। यह न्याय के दिन भी हो सकता है। पौलुस ने तीमुथियुस को (और हमें भी) आश्वस्त किया कि, देर-सवेर लोग उनकी वास्तविकता को देख लेंगे।

आयत 9 के पीछे का सिद्धान्त यह है कि समय चाहे जितना भी कठिन क्यों न हो, परमेश्वर नियंत्रण में बना रहता है। यह जानते हुए हमें निराश कभी नहीं होना चाहिए। उसने प्रतिज्ञा की है कि उसका वचन कभी टलेगा नहीं (मत्ती 24:35) और उसकी कलीसिया का नाश हो ही नहीं सकता है (मत्ती 16:18)। “तौभी परमेश्वर की पक्की नींव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है: ‘प्रभु अपनों को पहचानता है’” (2 तीमु. 2:19)।

अनुप्रयोग

स्वधर्म-त्याग के प्रति पौलुस की चिंता (3:1-5)

जैसे कि 1 तीमुथियुस 4:1-5 में, वैसे ही 2 तीमुथियुस 3:1-5 में भी भविष्यवाणी की गई है कि स्वधर्म-त्याग आ रहा है। जबकि 1 तीमुथियुस 4:1-5 में *सैद्धांतिक* स्वधर्म-त्याग की भविष्यवाणी की गई है, 2 तीमुथियुस 3:1-5 में चिंता *नैतिक* स्वधर्म-त्याग की है।

समाप्ति नोट्स

[1]वाल्टर बाऊर, *अ ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट एण्ड अदर अर्ली क्रिस्चियन लिटरेचर*, तीसरा एडिशन, रिवाइज्ड एंड एडिटेड फ्रेडरिक विलियम डेनकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2000), 1075-76. [2]रोनाल्ड ए. वार्ड, *कॉमेन्टरी ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1974), 186, से लिया गया। [3]डेविड लिप्स्कोम्ब एण्ड जे. डब्ल्यू. शेफर्ड*, अ कॉमेन्टरी ऑन द न्यू टेस्टामेन्ट एपिसल्स*, वॉल्यूम 5 (नैशविल: गॉस्पेल एडवोकेट कंपनी, 1942), 226. [4]कुछ लोगों ने ध्यान दिया कि “समय” (καιρός, *काइरोस* के बहुवचन से) का अनुवाद “मौसम” किया जा सकता है और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पौलुस कह रहा था कि बुरे दिन आएँगे और जाएँगे। यह सच है कि स्थिति कभी-कभी बहुत खराब होती है और यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न होती है; परन्तु, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिये, “कठिन समय” बना रहता है। [5]एच. सी. जी. मौले, *स्टडीज इन II तिमोथी*, क्रेगेल पोपुलर

कॉमेन्टरी सीरीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगेल पब्लिकेशन्स, 1977), 105. [6]वेयने जैक्सन, *बीफोर आई डाई: पौल्स लेटर्स टू तिमोथी एण्ड टाइटस* (स्टॉकटन, कैलीफोर्निया: क्रिश्चियन कूरियर पब्लिकेशन, 2007), 254. [7]"मनुष्य" जेनेरिक शब्द ἄνθρωπος *(अन्थरोपोस)* से आता है, जिसमें हर कोई, पुरुष और स्त्री दोनों आते हैं। [8]वाल्टर एल. लाइफेल, *1 & 2 तिमोथी, टाइटस*, दि NIV एप्लीकेशन कॉमेन्टरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 1999), 270. [9]फिलिआ संयुक्त यूनानी शब्द में भी पाया जाता है जिसका अनुवाद "भले के बैरी" किया गया है। [10]डेविड एल. रोपर, *गेटिंग सीरियस अबाउट लव* (सरसी, अर्कांसस: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 1992), 20-22, में प्रेम के प्रकारों की चर्चा विस्तार से की गई है।

[11]मत्ती 22:39 में "प्रेम करना" ἀγαπάω *(अगापाओ)* एक क्रिया है। सम्बन्धित संज्ञा रूप ἀγάπη (*अगापे*), 1 तीमुथियुस 1:5 में पाया जाता है। [12]फरीसी लोभियों के उदाहरण हैं (लूका 16:14)। [13]डब्ल्यू. ई. वाइन, मेरिल एफ. अंगर, और विलियम व्हाइट, जूनियर, *वाइन्'स कम्पलीट का एक्सपोजीटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेन्ट वर्ड्स* (नैशविले: थॉमस नेल्सन पबलिशर्स, 1985), 71. [14]विलियम बार्कले, *द लेटर्स टू तिमोथी, टाइटस, एण्ड फिलेमन,* रिवाइज्ड एडिशन, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1975), 185. [15]बाऊर, 41. [16]जोसेफ हेनरी थायर, *ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1962), 25. [17]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 495. [18]1 तीमुथियुस 1:13 में भी इसी अनुवाद का प्रयोग किया गया है। [19]वाइन, अनर्जर, एण्ड व्हाइट, 173. [20]ब्रूस बी. बर्टन, डेविड आर. वीरमैन, एण्ड नील विल्सन, *1 तिमोथी, 2 तिमोथी, टाइटस,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कॉमेन्टरी (व्हीटन, इल्लिनोय: टिंडेल हाउस पबलिशर्स, 1993), 205.

[21]माईक हिक्सन, "पेरील्युअस टाईम्स शैल कम (II तीमोथी 3:1)," *स्पिरिच्युल स्वोर्ड* 44, संख्या 3 (अप्रैल 2013): 17. [22]विलियम शेक्सपीयर *किंग लियर* I.4. [23]बार्कले, 187. [24]इसी प्रकार से एनोसियोस का भी अनुवाद, 1 तिमुथियुस 1:9 में, "अपवित्र" हुआ है, जो परमेश्वर या वह जो पवित्र है उसके प्रति विरोध का संकेत करता है। [25]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *गार्ड द गौस्पल: द मेसेज ऑफ 2 तीमोथी,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1973), 85. [26]रोपर, 19. [27]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 320. [28]बाऊर, 144. [29]*डायाबोलोस* वह शब्द है जिसे 1 तीमुथियुस 3:11 में "दोष लगाने वाली" कहा गया है। [30]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 322, 559.

[31]लेईफेल्ड, 270. [32]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 234; बाऊर, 79. [33]बार्कले, 190. [34]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 163. [35]NASB में, तीतुस 1:8 में φιλάγαθος के एक स्वरूप को "जो अच्छा है उससे प्रेम करना" कहा गया है। [36]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 64. [37]बाऊर, 867. [38]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 295. [39]डोनाल्ड गथरी, *द पास्टोरल एपिसल्स,* रिवाइज्ड एडिशन, द टिन्डेल न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1990), 169. [40]बाऊर, 873.

[41]*ट्यूफू* के एक स्वरूप का प्रयोग 1 तीमुथियुस 3:6 में अभिमानियों के मलिन विचारों को दिखाने के लिए किया गया है। [42]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 383. [43]उपरोक्त, 251. [44]बाऊर, 660. [45]उपरोक्त, 412. मसीही को पवित्रता और श्रद्धा प्रगट करनी चाहिए क्योंकि वह "सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन" व्यतीत करता है (1 तीमु. 2:2)। कुछ लोग केवल दिखावे के लिए भक्त होने का प्रयास करते हैं उसे कमाई का साधन बनाने के लिए (देखें 1 तीमु. 6:5)। [46]लेईफेल्ड, 271. [47]कुछ का मानना है कि 3:5 उनके विषय में नहीं है जो मसीही होने का दावा करते थे, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पौलुस के मन में इफिसुस की कलीसिया में झूठे शिक्षक सबसे ऊपर थे। [48]जे. ग्लैन गोउल्ड, "I एण्ड II तीमोथी, टाईटस," *बीकन बाइबल कॉमेन्ट्री,* वोल. 9, में (कैनसस सिटी, मिसौरी: बीकन हिल प्रैस, 1965), 648. [49]डेटन कीसी, "एन अप्पील टू बी ऑन गार्ड इन द लास्ट डेस् (2 तीमोथी 3)," *ट्रुथ फॉर टुडे* 18 (जून 1997): 4. [50]"इनकार" (ἀρνέομαι, *अर्नेओमाई)* करने का अर्थ है त्याग देना (देखें 2:12)।

[51]बाऊर, 124. [52]लिप्सकोम्ब एण्ड शेपर्ड, 230; बार्टन, वीमैंन, एण्ड विल्सन, 208; गथरी, 170. [53]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 138. [54]बाऊर, 333. [55]वार्ड, 189. [56]प्रथम शताब्दी में स्त्रियों ने मसीह के उद्देश्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया (देखें 1 तीमु. 2:9-15; 3:11; 5:3-16; तीतुस 2:3-5). [57]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 88. [58]बाऊर, 31. [59]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 295. [60]बाऊर, 985.

[61]जवानी की “अभिलाषाएँ” *(एपीथूमिया)* का उल्लेख 2:22 में है। 2 तीमुथियुस 2 और 3 में “अभिलाषाएँ” या “आवेग” अनिवार्य नहीं कि यौन संबंधित हों, परन्तु वे हो भी सकती थीं। [62]वाक्याँश “सत्य की पहचान,” के संबंध में 1 तीमुथियुस 2:4 पर टिप्पणियाँ देखें। [63]आर. सी. एच. लेंस्की, *द इन्टरप्रेटेशन ऑफ सेंट पॉल्स एप्पिसिल्स टू द कोलोशियंस, टू द थिस्स्लोनियंस, टू तीमोथी, टू टाईटस एण्ड टू फिलेमोन* (एन.पी.: लूथरन बुक कन्सर्न, 1937; रिप्रिंट, कोलंबस, ओहाइयो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946), 828. [64]*डमैस्कस डॉक्यूमेंट* 5.17-19. [65]*टार्गुम ऑफ स्यूडो-जौनाथान* निर्गमन 7:11 पर। [66]कार्ल एडविन आर्मेरडिंग ने “यन्नेस” और “यम्ब्रेस” से संबंधित यहूदी कहानियों को “गड़बड़ाई हुई किंवदंतियाँ” कहा। उन्होंने अनेकों प्राचीन स्त्रोतों का हवाला दिया जहाँ ये किंवदंतियाँ पाई जाती हैं। (कार्ल एडविन आर्मेरडिंग, “जैन्नेस एण्ड जैमब्रेस,” *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया,* रिवाइज्ड एडिशन, एड. ज्योफ्रे डब्ल्यू. ब्रोमिले में [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1982], 2:966.) “बुक ऑफ जैन्नेस एण्ड जैमब्रेस” के अंश भी पाए गए हैं। (जेम्स एच. चार्ल्सवर्थ, एड., *द ओल्ड टेस्टामेंट स्यूडएपीग्राफ़िया* [न्यू यॉर्क: डबलडे, 1985], 2:437-42.) [67]यह सुझाव भी दिया गया है कि पौलुस ने उन दो जादूगरों के उदाहरण को इसलिए प्रयोग किया क्योंकि झूठे शिक्षक जादू-टोनहों का प्रयोग करने का दावा करते थे। क्योंकि इफेसुस संसार के जादू-टोनहों का केन्द्र था (देखें प्रेरितों 19:19), इसलिए यह संभव है। [68]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 130; बाऊर, 529. [69]*एदोकिमोस* का एक स्वरूप को तीतुस 1:16 में “योग्य नहीं” शब्द कहा गया है। [70]2 तीमुथियुस 2:16 में, “बढ़ते जाएंगे” (“और भी अभक्ति में बढ़ते जाएंगे”) *प्रोकॉपटो* के एक स्वरूप का अनुवाद है।

[71]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 245; बाऊर, 84.